याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र
जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

परिचय

पुराने नियम में, परमेश्वर ने अपने लोगों को आशीर्वाद देने के लिए एक पवित्र तरीका स्थापित किया। उसने यह आज्ञा सीधे मूसा को दी, ताकि हारून महायाजक और उसके पुत्र इस्राएलियों को विशेष शब्दों से आशीर्वाद दें। यह आशीर्वाद गिनती 6:22–27 में मिलता है, जिसे अक्सर “हारूनी आशीर्वाद” या “याजकीय आशीर्वाद” कहा जाता है।

हालाँकि यह आशीर्वाद पुराने नियम के अधीन इस्राएल को दिया गया था, यह आज के सेवकों के लिए भी प्रासंगिक है। मसीह के माध्यम से, अब सभी विश्वासियों को एक राजसी याजकत्व में शामिल किया गया है:

“परन्तु तुम एक चुनी हुई जाति, एक राजसी याजकाई, एक पवित्र राष्ट्र, एक निज प्रजा हो…”
(1 पतरस 2:9)

इसलिए, चर्च में अगुवों के पास परमेश्वर की ओर से आशीर्वाद बोलने की शक्ति और जिम्मेदारी दोनों है।

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र
जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

पवित्र शास्त्र पाठ (ERV-HI)
गिनती 6:22–27

22 यहोवा ने मूसा से कहा,
23 “हारून और उसके पुत्रों से कह, ‘तुम इस्राएलियों को इस प्रकार आशीर्वाद दो:’

24 ‘यहोवा तुझे आशीर्वाद दे और तेरी रक्षा करे।
25 यहोवा तुझ पर अपना मुख चमकाए और तुझ पर अनुग्रह करे।
26 यहोवा तुझ पर अपना मुख उठाए और तुझे शांति दे।’

27 “वे इस्राएलियों पर मेरा नाम रखेंगे, और मैं उन्हें आशीर्वाद दूँगा।”

1. बाइबल में आशीर्वाद का स्वभाव

बाइबल में, आशीर्वाद केवल एक शुभकामना या अभिवादन नहीं है, बल्कि परमेश्वर की अधिकारयुक्त भविष्यवाणीपूर्ण घोषणा है। इब्रानी शब्द “बराक” (ברך (का अर्थ है किसी के जीवन में कृपा, समृद्धि और परमेश्वर की सामर्थ्य को बोलना। जब कोई याजक परमेश्वर की आज्ञा से आशीर्वाद बोलता है, तो ये शब्द खाली नहीं

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

होते — वे आत्मिक सामर्थ्य से परिपूर्ण होते हैं।

जैसा कि परमेश्वर स्वयं कहता है:

“वे इस्राएलियों पर मेरा नाम रखेंगे, और मैं उन्हें
आशीर्वाद दूँगा।”
(गिनती 6:27)

इसका अर्थ है कि जब यह शब्द परमेश्वर के आदेशानुसार बोले जाते हैं, तो वह स्वयं उन्हें पूरा करता है।

2. आशीर्वाद की संरचना

इस आशीर्वाद की प्रत्येक पंक्ति परमेश्वर और उसके लोगों के संबंध का एक पक्ष प्रकट करती है:

“यहोवा तुझे आशीर्वाद दे और तेरी रक्षा करे।”
(गिनती 6:24)

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

यह परमेश्वर की आत्मिक और शारीरिक भलाई के लिए देखभाल को दर्शाता है।

“यहोवा तुझ पर अपना मुख चमकाए और तुझ पर अनुग्रह करे।” (गिनती 6:25)

यह उसका प्रेम और निकटता दर्शाता है, जैसा कि यहाँ दिखता है:

“परमेश्वर हम पर कृपा करे और हमें आशीर्वाद दे, वह अपने मुख
का प्रकाश हम पर चमकाए।”
(भजन संहिता 67:1)

“यहोवा तुझ पर अपना मुख उठाए और तुझे शांति दे।”
(गिनती 6:26)

यह स्वीकार्यता और निकटता को दर्शाता है। “शालोम” (शांति) का अर्थ केवल संघर्ष की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि संपूर्णता, मेल,

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र
जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

और हर क्षेत्र में भलाई है।

3. याजक के पद की भूमिका

यह आशीर्वाद हारून और उसके पुत्रों—लेवीय याजकों—को दिया गया था, जो परमेश्वर और लोगों के बीच मध्यस्थ थे:

“तब हारून ने अपनी भुजाएँ लोगों की ओर उठाकर उन्हें
आशीर्वाद दिया… फिर उन्होंने बाहर आकर लोगों को आशीर्वाद दिया…”
(लैव्यव्यवस्था 9:22–23)

लेकिन नए नियम के अनुसार, अब मसीह हमारे महान महायाजक बन गए हैं:

“इसलिए, जब हमारे पास एक महान महायाजक है… तो आओ हम विश्वास
के साथ निकट जाएं।”
(इब्रानियों 4:14)

और उसने हमें भी एक याजकीय राष्ट्र बना दिया है:

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र
जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

“… और उसने हमें अपने परमेश्वर और पिता के लिए राजा और याजक बनाया है…”
(प्रकाशितवाक्य 1:6)

इसलिए आज के पास्टर, प्राचीन और आत्मिक अगुवा परमेश्वर की उपस्थिति के प्रतिनिधि हैं और उसके नाम से आशीर्वाद बोलने के अधिकारी हैं।

4. परमेश्वर के नाम की शक्ति

वचन कहता है:

“वे इस्राएलियों पर मेरा नाम रखेंगे, और मैं उन्हें
आशीर्वाद दूँगा।”
(गिनती 6:27)

इब्रानी संदर्भ में, “नाम” का अर्थ केवल शब्द नहीं, बल्कि चरित्र, अधिकार और उपस्थिति है। जब परमेश्वर का नाम किसी पर रखा

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र
जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7

जाता है, तो वह उस व्यक्ति को उसकी संधि और सुरक्षा में लाता है।

नए नियम में भी यही सच्चाई है:

“स्वर्ग के नीचे मनुष्यों को दिया गया कोई और नाम नहीं है
जिसके द्वारा हम उद्धार पाएँ।”
(प्रेरितों के काम 4:12)

“इसलिए, जाकर सब राष्ट्रों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता,
पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।”
(मत्ती 28:19)

“जब तुम मसीह पर विश्वास लाए… तब तुम्हें वादा किया गया पवित्र आत्मा की छाप मिली।”
(इफिसियों 1:13)

इसलिए, जब आज यह आशीर्वाद बोला जाता है, तो यह परमेश्वर की

याजकीय आशीर्वाद: परमेश्वर के सेवकों के लिए एक पवित्र जिम्मेदारी

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 8

संप्रभुता और सुरक्षा को उसके लोगों पर बुलाना होता है।

आशीषित रहो।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp